www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-6* *June 2025***

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल' में लोक चेतना

डॉ0 सचेन्द्र कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, फुन्दी सिंह लौना राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जालौन

सारांश

फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास मैला आँचल हिंदी साहित्य में आंचलिकता और लोक जीवन के जीवंत चित्रण के लिए जाना जाता है। यह उपन्यास न केवल स्वतंत्रता–पूर्व भारत के ग्रामीण परिवेश को दर्शाता है, बल्कि उसमें व्याप्त लोक चेतना, संघर्षशीलता और सामाजिक मूल्यबोध को भी मुखर रूप से प्रस्तुत करता है। 'मैला आँचल' में ग्रामीण जीवन की विविध परतें कृ आर्थिक शोषण, अशिक्षा, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव और स्त्री–वंचना को लेकर जो लोकचेतना निर्मित होती है, वह पाठक को एक ओर यथार्थ के करीब ले जाती है तो दूसरी ओर सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करती है। उपन्यास का प्रमुख पात्र डॉक्टर प्रशांत जहाँ आधुनिक शिक्षा और जागरूकता का प्रतीक है, वहीं अन्य ग्रामीण पात्र उस लोकसंस्कार और परंपरा के वाहक हैं, जो धीरे–धीरे जागृति की ओर उन्मुख हो रहे हैं। लेखक ने जिस बारीकी से भाषा, बोली, लोकगीत, कहावतें, मान्यताएं और रीति–रिवाजों का चित्रण किया है, वह उपन्यास को केवल साहित्यिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक दस्तावेज़ बना देता है। रेणु की लेखनी में लोक चेतना का स्वर केवल सामाजिक आलोचना तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह जन–संघर्ष, किसान आंदोलन, स्वाधीनता संग्राम और जन–स्वास्थ्य जैसे गंभीर मुद्दों से भी जुड़ता है। यही कारण है कि 'मैला आँचल' में प्रस्तुत लोक चेतना, केवल भावुकता नहीं बल्कि यथार्थपरक समझ और बदलाव की दिशा में एक कदम है। यह शोध–पत्र उपन्यास में निहित लोक चेतना के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करता है– जैसे ग्रामीण सामाजिक संरचना, लोक भाषा की भूमिका, लोक सांस्कृतिक चेतना, तथा राजनीतिक और सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया। इसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि 'मैला आँचल' केवल एक कथा नहीं, बल्कि भारत के ग्रामीण समाज की सामूहिक चेतना का जीवंत दस्तावेज़ है, जिसमें जन–संवेदना और जन–शक्ति की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है।

मुख्य–शब्द– फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, लोक चेतना, आंचलिकता, ग्रामीण जीवन, सामाजिक यथार्थ, हिंदी उपन्यास, जनसंघर्ष, सांस्कृतिक बोध।

परिचय

फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी साहित्य में आंचलिकता के सशक्त प्रवक्ता माने जाते हैं। उन्होंने भारतीय ग्रामीण समाज की जिन गूढ़ परतों को अपनी कृतियों में उकेरा है, वे केवल कथा तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि एक सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक दस्तावेज के रूप में उभरती हैं। रेणु का रचनात्मक संसार जन–जीवन की विविधताओं, संघर्षों और चेतना से गहराई से जुड़ा है, जिसे उन्होंने अत्यंत स्वाभाविक शैली में प्रस्तुत किया। फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के पूर्णिया जिले के औराही हिंगना गाँव में हुआ था। उनके पिता शिलानाथ मंडल स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े हुए थे, जिसका प्रभाव रेणु के विचारों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात उन्होंने नेपाल और भारत के विभिन्न अंचलों में अध्ययन किया। रेणु

स्वतन्त्रता संग्राम के सक्रिय भागीदार रहे और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उन्होंने भाग लिया। रेणु का साहित्यिक अवदान आंचलिकता के रूप में सबसे अधिक चर्चित रहा है। उन्होंने उन अंचलों, वर्गों और जीवन स्थितियों को केंद्र में रखा जिन्हें पूर्ववर्ती साहित्य ने या तो उपेक्षित किया था या सतही ढंग से चित्रित किया था। उनकी रचनाओं में मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, ठुमरी, और तबाक़ीबाज़ जैसी कृतियाँ शामिल हैं।

शैली की दृष्टि से रेणु की भाषा बहुस्तरीय है– वे कथा में स्थानीय बोलियों, मुहावरों, लोकोक्तियों और ग्रामीण संस्कृति के शब्दों का प्रयोग सहजता से करते हैं। यह शैली उन्हें लोक जीवन से जोड़ती है और पाठक को पात्रों की वास्तविकता के निकट ले जाती है। संवादों की स्वाभाविकता, विवरण की संप्रेषणीयता और पात्रों की भाषिक विविधता उनकी शैली की विशेष पहचान है।

रेणु का बहुचर्चित उपन्यास मैला आँचल 1954 में प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास हिंदी साहित्य में आंचलिक उपन्यास की विधा का सूत्रपात करने वाला माना जाता है। इस रचना में लेखक ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय गाँवों की वास्तविकता को चित्रित किया है। यह वह समय था जब देश आज़ाद हो चुका था, किंतु ग्रामीण जीवन में गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास और शोषण की जड़ें गहरी थीं। उपन्यास की पृष्ठभूमि मिथिलांचल क्षेत्र का एक काल्पनिक गाँव है, जो वास्तविकता से इतना समीप है कि पाठक उसमें स्वयं को उपस्थित महसूस करता है। रेणु ने इस उपन्यास के माध्यम से स्वतंत्र भारत में सामाजिक परिवर्तन की संभावनाओं और सीमाओं को दर्शाया है। डॉक्टर प्रशांत जैसे पात्रों के माध्यम से उन्होंने आधुनिकता और जन–जागरण की ओर संकेत किया है, वहीं लोक मान्यताओं और सामाजिक रूढ़ियों के संघर्ष को भी बारीकी से प्रस्तुत किया है। मैला आँचल में पृष्ठभूमि केवल दृश्यात्मक नहीं है, वह अपने आप में एक जीवंत पात्र है, जिसमें लोक संस्कृति, राजनीति, धार्मिकता और जनभावनाओं का बहुआयामी चित्र उपस्थित होता है। इस उपन्यास को साहित्यिक, सांस्कृतिक और समाजशास्त्रीय दृष्टि से मूल्यवान माना जाता है।

लोक चेतना का अर्थ है– समाज के उस वर्ग की सामूहिक मानसिकता, जो परंपरा, अनुभव, संस्कृति और सामाजिक परिस्थिति के आधार पर निर्मित होती है। यह चेतना शोषण के विरुद्ध संघर्ष, सामूहिकता की भावना और सामाजिक बदलाव की आकांक्षा के रूप में अभिव्यक्त होती है। हिंदी साहित्य में लोक चेतना की अभिव्यक्ति भारतेंदु युग से लेकर आधुनिक साहित्य तक विविध रूपों में हुई है, किंतु फणीश्वरनाथ रेणु ने इसे गहराई और व्याप्ति दी। मैला आँचल में लोक चेतना का स्वर ग्राम्य जीवन की जटिलताओं के बीच उभरता है दृ चाहे वह स्वतंत्रता संग्राम में ग्रामीणों की भागीदारी हो, स्वास्थ्य सेवाओं के लिए संघर्ष हो, या सामाजिक न्याय की मांग हो। रेणु की यह विशेषता रही कि उन्होंने लोक चेतना को केवल आदर्श के रूप में नहीं, बल्कि एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया। उनके पात्र केवल पीड़ित नहीं हैं, वे संघर्षशील हैं, प्रश्न करते हैं और परिवर्तन के वाहक बनते हैं। यही कारण है कि मैला आँचल में लोक चेतना, साहित्यिक उपकरण नहीं बल्कि कथ्य का केंद्र बन जाती है।

'मैला आँचल' का कथानक और लोक जीवन का चित्रण

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित मैला आँचल हिंदी उपन्यास साहित्य में एक मील का पत्थर माना जाता है, जिसका कथानक स्वतंत्रता–प्राप्ति के पश्चात भारत के ग्रामीण जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और चेतनाओं का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास की कथा एक मिथिलांचल के अंचल विशेष में बसे गाँव की पृष्ठभूमि में घटित होती है, जिसमें ग्रामीण समाज की संपूर्ण संरचना, रहन–सहन, बोली–बानी, श्रमजीवी जन की स्थिति और सांस्कृतिक मूल्य–व्यवस्था का प्रभावी चित्रण है। कथानक की मूल धारा डॉक्टर प्रशांत नामक चरित्र के माध्यम से प्रवाहित होती है, जो एक आदर्शवादी युवक के रूप में गाँव आता है और वहाँ स्वास्थ्य सेवा के साथ–साथ सामाजिक चेतना का प्रसार करता है। उपन्यास में कोई पारंपरिक केंद्रीय नायक नहीं है, बल्कि इसमें गाँव का समूचा जीवन–प्रवाह ही नायक के रूप में उपस्थित है। यह रचना अनेक पात्रों और घटनाओं के माध्यम से ग्रामीण समाज की बहुआयामी छवि प्रस्तुत करती है।

ग्रामीण समाज की संरचना को रेणु ने अत्यंत यथार्थता से उकेरा है। यहाँ जमींदार, महाजन, खेतिहर किसान, भूमिहीन मजदूर, पुरोहित, मठाधीश, दाई, बटोही, व्यापारी, शिल्पकार कृ सभी वर्गों और जातियों के लोग उपस्थित हैं। यह संरचना केवल सामाजिक नहीं, बल्कि आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी जटिल है। हर पात्र अपने अनुभव, पीड़ा और आशाओं के साथ लोक जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। जैसे बलचनमा, जो एक सीधा–साधा

किसान है, उसकी बोली, हावभाव, और मानसिकता एक आम ग्रामीण की वास्तविक झलक प्रदान करते हैं।

रेणु का विशेष बल उन दैनिक गतिविधियों और जीवन–प्रवाह पर है, जो ग्रामीण जीवन की आत्मा हैं। खेत की जुताई, बोआई–कटाई के समय का सामूहिक श्रम, त्योहारों की धूमधाम, शादी–ब्याह के लोकाचार, हाट–बाजार की चहल–पहल, और गाँव के चौपाल पर होने वाली चर्चाएँ, उपन्यास को सामाजिक दस्तावेज़ के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान करती हैं। इन विवरणों में केवल दृश्य–संवेदन नहीं है, बल्कि गाँव के लोगों की मानसिकता, विश्वास और जिजीविषा की झलक भी समाहित है। किसान, मजदूर और साधारण जनों की आर्थिक और सामाजिक परिस्थिति का अंकन भी उपन्यास का केन्द्रीय तत्व है। छोटे किसानों की भूमि हड़पने के षड्यंत्र, साहूकारों का सूदखोरी–जाल, और मजदूरों की बेबसी दृ ये सभी प्रसंग भारतीय ग्रामीण समाज के उस कटु यथार्थ को उजागर करते हैं, जिसे प्रायः शहरी विमर्श से अलग–थलग रखा गया है। रेणु ने इन पात्रों की विवशताओं को करुणा से नहीं, बल्कि आत्म–सम्मान और संघर्ष की चेतना से चित्रित किया है।

स्थानीय बोली, रहन–सहन और जीवन–मूल्यों का चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है। मैथिली, भोजपुरी और मगही के शब्दों, लोकोक्तियों, गालियों, गीतों और मुहावरों का प्रयोग उपन्यास को विशिष्ट पहचान देता है। जैसे– "जा बलचनमा, देख भैंस कहाँ गई!" जैसे संवाद पात्रों की भाषा को प्रामाणिकता देते हैं। इसके अलावा, लोकगीत, भजन, और जत्रा की पंक्तियाँ उपन्यास में बार–बार आती हैं जो लोकजीवन की सांस्कृतिक चेतना का परिचायक हैं। जीवन–मूल्य जैसे सहयोग, सह–अस्तित्व, सामूहिकता, ईमानदारी और जातिगत सीमाओं के बावजूद मानवीय संवेदना की उपस्थिति ये सभी उपन्यास में प्रकट होते हैं। 'मैला आँचल' में यह सिद्ध होता है कि लोक समाज भले ही साधनों से वंचित हो, किंतु उसमें मानवीयता, सांस्कृतिक समृद्धि और संघर्ष की चेतना जीवित है।

लोक साहित्य और लोक परंपराओं की उपस्थिति

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास मैला आँचल में लोक जीवन का चित्रण केवल सामाजिक या राजनैतिक परिप्रेक्ष्य तक सीमित नहीं रहता, अपितु वह साहित्य और संस्कृति के उस आत्मिक धरातल तक पहुँचता है, जहाँ लोक साहित्य और लोक परंपराएँ जनजीवन की आत्मा के रूप में विद्यमान रहती हैं। यह उपन्यास अपने सम्पूर्ण स्वरूप में एक जीवंत सांस्कृतिक दर्पण है, जिसमें लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, रीति–रिवाज़, पर्व–त्योहार तथा जातीय विविधताओं के भीतर बसने वाली लोकधर्मी दृष्टि का सशक्त प्रयोग हुआ है। रेणु का यह उपन्यास लोकगीतों की बहुरंगी छाया में रचा गया एक सांगीतिक कैनवास प्रतीत होता है। विवाह, यज्ञोपवीत, जत्रा, कजरी, बिरहा, सोहर, झूमर जैसे अनेक गीत उपन्यास के पात्रों की भाषा और भावनाओं में समाहित हैं। किसी स्त्री के प्रसव के समय गाया गया सोहर, या किसान की थकान मिटाता हुआ बिरहा ये केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद का माध्यम हैं। इन लोकगीतों के माध्यम से पात्रों की संवेदनाएँ, मानसिक अवस्थाएँ और परिस्थितियाँ मुखर होती हैं। उदाहरणस्वरूप, गाँव में जब कोई स्त्री चूल्हा जलाते समय गुनगुनाती है– "हो रामा, सावन आयो रे...", तो वह पंक्ति उस स्त्री के मानस और ग्रामीण समयबोध को भी उजागर करती है।

उपन्यास में प्रयुक्त लोककथाएँ और कहावतें भी ग्रामीण ज्ञान और अनुभव के संचित रूप हैं। जैसे दृ "जो गरजते हैं, वो बरसते नहीं", "नहिं माया, नहिं सपना, मोरा जीवन हाय रे अपना", जैसी उक्तियाँ केवल सजावटी अलंकार नहीं हैं, बल्कि लोक–चेतना की वाचिक परंपरा को निरंतरता प्रदान करती हैं। लोककथाओं में पाए जाने वाले विश्वास, मिथक और सामाजिक शिक्षा भी उपन्यास के भावभूमि में अन्तर्भूत हैं। रेणु ने इन्हें पात्रों के कथन, घटनाओं के प्रवाह और सामाजिक संवादों में इस प्रकार पिरोया है कि वे कथा को जीवंतता और स्वाभाविकता प्रदान करते हैं।

ग्रामीण समाज की रीति–रिवाज, परंपराएँ और पर्व–त्योहार उपन्यास में जीवंत रूप में चित्रित हैं। चाहे वह छठ पूजा की तैयारी हो, सावन में झूला झूलने की परंपरा हो, या शिवरात्रि पर व्रत रखने वाली स्त्रियाँ– इन सबके माध्यम से लेखक ने न केवल धार्मिक विश्वासों का चित्रण किया है, बल्कि सामाजिक एकता, सामूहिकता और परंपरा की निरंतरता को भी उजागर किया है। पात्रों के जीवन में यह सब केवल आस्था नहीं, अपितु सामाजिक संरचना का हिस्सा है। पर्व–त्योहार केवल भावनात्मक विसर्जन नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन के कठिन परिश्रम में थोड़ी राहत और ऊर्जा का संचार भी हैं। रेणु का दृष्टिकोण जातीय और सांस्कृतिक विविधताओं के प्रति अत्यंत लोकधर्मी रहा है। उन्होंने जातिगत संरचना की वास्तविकता को छिपाया नहीं है, परंतु साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि विभिन्न जातियाँ, धर्म और भाषिक समुदाय किस प्रकार एक ही सामाजिक संरचना

में सह–अस्तित्व की भावना से जुड़ते हैं। चौधरी, ब्राह्मण, तेली, कहार, मुसहर, धोबी, मुसलमान दृ सभी को लेखक ने बिना किसी आग्रह या पूर्वग्रह के चित्रित किया है। यह सह–अस्तित्व ही लोकधर्मी दृष्टिकोण की पहचान है, जहाँ विविधताओं में एकता की सांस्कृतिक भावना निहित होती है।

उपन्यास में प्रयोग की गई भाषा भी लोकधर्मी चेतना को पुष्ट करती है। मैथिली, भोजपुरी, मगही के शब्दों का प्रयोग केवल स्थान–विशेष की पहचान नहीं है, बल्कि वह स्थानीय जीवन की आत्मा को व्यक्त करने का माध्यम है। कहन की शैली, संवाद की सहजता, और बोली–बानी की ताजगी पाठक को सीधे ग्रामीण परिवेश में ले जाती है। यह लोकभाषा केवल संप्रेषण का उपकरण नहीं, बल्कि संस्कृति की संवाहिका है। इस प्रकार, मैला आँचल केवल एक उपन्यास नहीं है, बल्कि लोक साहित्य और परंपरा का जीवंत कोष है, जो भारतीय ग्रामीण समाज के सांस्कृतिक अस्तित्व को अभिव्यक्त करता है। रेणु की कलम ने लोक संस्कृति को जिस आत्मीयता और संवेदनशीलता से स्थान दिया है, वह उन्हें अन्य कथाकारों से पृथक और विशिष्ट बनाता है।

राजनीतिक चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन की लोक व्याख्या

फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास मैला आँचल भारतीय ग्रामीण समाज के उस युगीन मोड़ का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है, जब देश राजनीतिक स्वतंत्रता की दहलीज पर खड़ा था और गाँवों में नई चेतना प्रस्फुटित हो रही थी। यह उपन्यास केवल एक सामाजिक वृत्तांत नहीं, अपितु स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में उभरती जनचेतना और लोक सहभागिता का सांस्कृतिक आख्यान है, जिसमें राजनीतिक विचारधाराएँ लोक दृष्टिकोण से घुल–मिल जाती हैं। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव शहरी केंद्रों तक सीमित नहीं था। इसके प्रभाव की लहरें देश के दूर–दराज़ ग्रामीण अंचलों तक पहुँची थीं, जहाँ की जनता अपने स्वाभाविक ढंग से इस संघर्ष का भाग बन चुकी थी। मैला आँचल में मिथिला अंचल का एक ग्रामीण क्षेत्र इस संघर्ष का मूक दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय भागीदार है। उपन्यास में ऐसे प्रसंगों की कमी नहीं, जहाँ यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण जन आंदोलन की भावना से किस प्रकार प्रेरित थे। चरखा कातने की प्रवृत्ति, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, सार्वजनिक सभाओं और प्रचार अभियानों में भागीदारी कृ यह सब दर्शाता है कि स्वतंत्रता संग्राम ग्रामीण मानस में घर कर चुका था। इस उपन्यास में अनेक पात्र ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हैं। डॉ. प्रशांत, जो उपन्यास का केन्द्रीय चरित्र है, न केवल एक चिकित्सक है, बल्कि स्वराज्य और सामाजिक बदलाव का वाहक भी है। उसकी चेतना ग्रामीण जनता को औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त करने की दिशा में अग्रसर है। रेणु ने स्वतंत्रता आंदोलन को किसी नारेबाज़ी या आदर्शवादिता के रूप में नहीं, बल्कि गाँव की दिनचर्या, संबंधों और जीवन–मूल्यों में रचा–बसा दिखाया है। यही कारण है कि यह राजनीतिक चेतना किसी भाषण या घोषणापत्र से नहीं, बल्कि लोक व्यवहार और सांस्कृतिक प्रतीकों से व्यक्त होती है।

लोक नायक केवल बड़े नेताओं के रूप में चित्रित नहीं हैं, बल्कि उपन्यास में अनेक छोटे पात्र कृ जैसे बलचनमा, फगुआ, बूढ़े स्वराजी बाबा कृ ऐसे हैं जो जनांदोलन के प्रत्यक्ष प्रतीक बन जाते हैं। ये वे लोग हैं, जो अपने सीमित संसाधनों और समझ के बावजूद स्वतंत्रता आंदोलन को एक धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक दायित्व मानते हैं। जब कोई वृद्ध यह कहता है कि "गांधी बाबा के कहने पर नमक छोड़ा है", तो उसमें एक धार्मिक आस्था और राष्ट्रीय कर्तव्य की मिली–जुली भावना दिखाई देती है। इस लोक चेतना में देशभक्ति किसी वैचारिक तर्क का परिणाम नहीं, बल्कि सामूहिक भावना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति बन जाती है। रेणु की लेखनी की विशेषता यह है कि उन्होंने राजनीतिक विचारधाराओं को लोक जीवन की भाषा और बिम्बों में ढालकर प्रस्तुत किया है। गाँधीवाद, समाजवाद, साम्यवाद कृ ये शब्द उपन्यास में शब्दावली नहीं, बल्कि व्यवहारिक संदर्भ बन जाते हैं। किसी गाँववासी के लिए 'गाँधी' एक राजनीतिक विचार नहीं, बल्कि त्याग, सादगी और सत्य का मूर्तरूप है। इसी प्रकार समाजवाद का तात्पर्य 'सबके साथ बराबरी से बैठकर खाना' है। लेखक ने विचारधाराओं को दर्शन नहीं, व्यवहार में उतारा है कृ यही लोक दृष्टिकोण की पहचान है। रेणु के लेखन में राजनीतिक चेतना केवल घटनाओं या विचारों की प्रस्तुति तक सीमित नहीं, बल्कि एक मूल्यबोध के रूप में उभरती है, जहाँ लोक समाज अपनी सीमाओं में रहकर भी राष्ट्रीय आंदोलन का अंग बन जाता है। उनकी दृष्टि में स्वतंत्रता केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की यात्रा है। मैला आँचल इस यात्रा का प्रतीक है, जिसमें लोक चेतना की बुनियाद पर एक नई राजनीतिक समझ विकसित होती है। यही समझ उपन्यास को केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और सामाजिक दस्तावेज़ का दर्जा प्रदान करती है।

रेणु की दृष्टि में लोक चेतना का आदर्श

फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य उस सांस्कृतिक विमर्श का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें जनजीवन की पीड़ा, संघर्ष, स्वाभिमान और चेतना के स्वर स्पष्ट सुनाई देते हैं। मैला आँचल उनके रचनात्मक जीवन का वह प्रतिमान है, जिसमें लोक चेतना केवल कथा का विषय नहीं, बल्कि वैचारिक और सामाजिक प्रतिबद्धता का आदर्श रूप बनकर सामने आती है। रेणु की दृष्टि में लोक चेतना कोई भावुकतापूर्ण स्मृति नहीं, बल्कि वह जीवंत अनुभव है जो समाज को आत्मगौरव, समरसता और जागरूकता की दिशा में प्रेरित करता है। रेणु के साहित्य में जन–सरोकार सर्वोपरि हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में सत्ता, सत्ता के प्रतिनिधियों और शोषणकारी व्यवस्था से अधिक महत्त्व उन लोगों को दिया है, जो अपनी ज़मीन, अपनी बोली, अपने श्रम और अपने संबंधों के बल पर जीवन की चुनौतियों का सामना करते हैं। उनका साहित्य किसी बौद्धिक वाद की गिरफ्त में नहीं, बल्कि लोक जीवन की सहजता और अनुभवजन्य सत्य के साथ खड़ा है। मैला आँचल में डॉ. प्रशांत का चरित्र केवल आधुनिक विचारधारा का प्रतीक नहीं, बल्कि उस आदर्श का वाहक है, जो समाज के निचले तबके को सम्मान और अधिकार दिलाने के लिए कार्य करता है। रेणु की साहित्यिक दृष्टि मूलतः परिवर्तनकामी है, किंतु यह परिवर्तन किसी क्रांति की उद्घोषणा से नहीं, अपितु संवेदनशील सहचर्य से उपजता है। आम जनजीवन की गरिमा और उसकी संवेदना रेणु की रचनात्मक दृष्टि का केंद्रीय तत्व है। उन्होंने जिन पात्रों को उपन्यास में स्थान दिया है कृ जैसे बलचनमा, तोती, बूढ़े स्वराजी बाबा या फगुआ वे सब किसी विशिष्ट उपलब्धि के कारण नहीं, बल्कि अपनी साधारणता में ही विशिष्ट हैं। रेणु ने इन्हें 'प्रतीक' नहीं बनाया, बल्कि 'प्रतिनिधि' के रूप में प्रस्तुत किया है। इन पात्रों में कोई महानायकत्व नहीं है, फिर भी उनमें वह गरिमा है जो एक असली भारतीय ग्रामवासी की आत्मा को प्रतिबिंबित करती है। वे खेतों में काम करते हैं, त्योहारों में गाते हैं, अन्याय के विरुद्ध उठ खड़े होते हैं और समय पड़ने पर करुणा भी व्यक्त करते हैं। यह गरिमा न किसी शासन से मिलती है, न किसी संस्था से कृ यह लोक जीवन की आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक विरासत की देन है।

रेणु की लेखनी सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़ी है। उन्होंने जिस तरह से अपनी कथाओं में जातीय असमानता, स्त्री की स्थिति, आर्थिक शोषण, स्वास्थ्य समस्याएँ, अशिक्षा और अंधविश्वास जैसे विषयों को उठाया है, वह उनकी रचनात्मक प्रतिबद्धता को स्पष्ट करता है। मैला आँचल केवल गाँव की कहानी नहीं है, बल्कि उस समाज का दस्तावेज़ है, जहाँ परिवर्तन की आकांक्षा है, परंतु उसके मार्ग में अनेक बाधाएँ भी हैं। यह प्रतिबद्धता न तो घोषणापत्र बनकर आती है, न ही आरोपों के माध्यम से कृ बल्कि यह संवेदनात्मक गहराई से उपजी हुई चेतना है, जो पाठक को भीतर तक झकझोर देती है। रेणु के लिए लोक चेतना केवल सामाजिक इकाई नहीं, बल्कि एक नैतिक मूल्य है। इस चेतना में आस्था, संघर्ष, करुणा और जिजीविषा का समन्वय है। उनकी दृष्टि में लोक वह है जो समय की आँधी में भी अपनी पहचान बनाए रखता है। वह आधुनिकता को अस्वीकार नहीं करता, परंतु अपनी जड़ों को छोड़कर भी नहीं चलता। मैला आँचल में यह आदर्श पूरी रचना में व्याप्त है कृ नायक और सामान्य पात्रों से लेकर संवादों और वर्णनों तक।

'मैला आँचल' में लोक चेतना की समकालीन प्रासंगिकता

फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आँचल हिंदी साहित्य की उन कालजयी रचनाओं में से एक है, जो समय बीतने के साथ और अधिक प्रासंगिक हो उठती हैं। यह उपन्यास स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक ग्रामीण यथार्थ को जिस सजीवता, संवेदना और सत्यता के साथ चित्रित करता है, वह आज भी हमारे समाज की कई जटिलताओं को समझने में मार्गदर्शक बन सकता है। मैला आँचल में अभिव्यक्त लोक चेतना केवल तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह भारतीय ग्राम्य संस्कृति, उसके अंतर्विरोधों, संघर्षों और सामूहिक आशाओं का ऐसा दस्तावेज है, जिसकी पुनर्पाठ की आवश्यकता आज पहले से कहीं अधिक है। आज भी ग्रामीण भारत की अनेक समस्याएँ मूलतः वैसी ही हैं, जैसी रेणु ने मैला आँचल में दर्शाई थीं कृ जैसे अशिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं की दुर्दशा, सामाजिक विषमता, जातीय विभाजन, कृषि संकट, बेरोज़गारी, ग्रामीण पलायन, और भ्रष्ट प्रशासनिक तंत्र। डॉ. प्रशांत जैसे पात्र आज भी आवश्यक हैं, जो केवल आधुनिकता के प्रतीक न बनकर सेवा, सुधार और संवेदनशीलता के वाहक बनें। गाँवों में आज भले ही मोबाइल, इंटरनेट, और सरकारी योजनाएँ पहुँच चुकी हों, लेकिन इनका सामाजिक प्रभाव तब तक सीमित है जब तक लोक चेतना जागरूक, सशक्त और आत्मनिर्भर नहीं बनती। आज के ग्रामीण भारत में रेणु की दृष्टि इसलिए अधिक उपयोगी हो जाती है क्योंकि उन्होंने केवल समस्याओं का चित्रण नहीं किया, बल्कि यह दिखाया कि ग्रामीण समाज अपनी चेतना, संस्कृति

और आपसी सहयोग के बल पर समाधान की दिशा में कैसे आगे बढ़ सकता है। मैला आँचल के पात्र केवल शोषित नहीं हैं, वे संघर्षशील भी हैं कृ वे अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं और हर परिवर्तन का आत्मसात ग्रामीण ढंग से करते हैं। आज जब ग्रामीण विकास की योजनाएँ प्रायः शहरी सोच पर आधारित होती हैं, तब रेणु की यह दृष्टि जो विकास को लोक संस्कृति, परंपरा और आत्मसम्मान से जोड़ती है कृ अत्यंत आवश्यक हो जाती है।

रेणु के उपन्यास में व्यक्त लोक चेतना को आज के संदर्भ में पुनर्पाठ करने की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि आज ग्रामीण समाज वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और पूँजीवादी प्रभावों से जूझ रहा है। इन परिवर्तनों में उसकी भाषिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान संकटग्रस्त हो रही है। ऐसे में रेणु की रचनाएँ यह स्मरण कराती हैं कि लोक संस्कृति को नष्ट नहीं होने देना चाहिए, बल्कि उसे सहेजते हुए आधुनिक विकास के साथ संतुलन बनाना चाहिए। मैला आँचल में वर्णित आंचलिकता, बोली, परंपराएँ, लोकगीत, रीति–रिवाज़ और सामूहिकता की भावना कृ ये सब आधुनिक सामाजिक विज्ञान के लिए अध्ययन के प्रामाणिक स्रोत हो सकते हैं। आज जब नीति निर्धारण और योजनाओं में जमीनी सच्चाइयों को कमज़ोर रूप में समझा जाता है, तब रेणु जैसे लेखकों की दृष्टि नीति, शिक्षा और समाजशास्त्र को नई दिशा दे सकती है।

लोक चेतना की पुनर्पाठ की संभावनाएँ केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और राजनीतिक भी हैं। मैला आँचल यह स्पष्ट करता है कि कोई भी समाज तभी स्थायी रूप से आगे बढ़ सकता है, जब उसकी आत्मा कृ अर्थात् उसका लोक कृ सचेत, संगठित और सम्मानित हो। रेणु की लेखनी में यही चेतना समाहित है कृ एक ऐसी चेतना जो आधुनिकता और परंपरा, विकास और संस्कृति, बदलाव और जड़ों के बीच संतुलन बनाती है। इसीलिए, मैला आँचल आज भी न केवल एक उपन्यास, बल्कि सामाजिक पुनराविष्कार का माध्यम बन सकता है।

निष्कर्ष

मैला आँचल केवल एक आंचलिक उपन्यास नहीं, बल्कि भारतीय ग्रामीण चेतना का एक जीवंत दस्तावेज़ है, जिसमें लोक जीवन, परंपरा, संघर्ष और सांस्कृतिक आत्मबोध को अत्यंत स्वाभाविक रूप में चित्रित किया गया है। फणीश्वरनाथ रेणु की लेखनी में न केवल कथात्मक कौशल की उत्कृष्टता है, बल्कि उसमें जनसरोकारों, सामाजिक न्याय और सामूहिक चेतना के प्रति एक गहन प्रतिबद्धता भी समाहित है। यह उपन्यास अपनी विषयवस्तु, भाषा, शैली और दृष्टिकोण में लोक चेतना का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक और प्रेरक है जितना अपने प्रकाशन काल में था। उपन्यास में लोक चेतना केवल घटनाओं या पात्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक व्यापक जीवन–दृष्टि के रूप में उभरती है। रेणु ने यह स्पष्ट किया है कि गाँव के लोगों में गहन संवेदना, सामाजिक बोध और सांस्कृतिक विरासत की शक्ति विद्यमान है, जिसे उचित दिशा मिले तो वह परिवर्तन का वाहक बन सकती है। बलचनमा, तोती, बूढ़े बाबा, डॉ. प्रशांत कृ ये सभी पात्र किसी विचारधारा के प्रवक्ता नहीं, बल्कि लोक चेतना के वाहक हैं। उपन्यास इस सत्य को प्रमाणित करता है कि परिवर्तन का मार्ग केवल सत्ता के गलियारों से नहीं, बल्कि गाँव के चौपाल, खेत और चूल्हे से होकर भी गुजरता है। फणीश्वरनाथ रेणु की साहित्यिक विरासत हिंदी साहित्य के इतिहास में एक अनूठा स्थान रखती है। उन्होंने हिंदी उपन्यास को शहरी, संभ्रांत विमर्श से निकालकर ग्रामीण, लोकजीवन की गहराइयों में प्रतिष्ठित किया। उनके साहित्य की सामाजिक भूमिका इस मायने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने आवाज़ उन लोगों को दी, जिनकी आवाज़ अक्सर मुख्यधारा में दबा दी जाती है। उनकी भाषा, शैली और कथानक उन करोड़ों लोगों की पीड़ा और आशाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो भारत की असली आत्मा हैं। मैला आँचल के माध्यम से उन्होंने यह सन्देश दिया कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन या सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि समाज के प्रति सजग उत्तरदायित्व भी है।

अंततः कहा जा सकता है कि मैला आँचल केवल एक साहित्यिक रचना नहीं, बल्कि भारतीय लोक जीवन का सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास है, जो आज भी हमें यह सिखाता है कि लोक चेतना के बिना कोई भी राष्ट्र स्थायी विकास की ओर अग्रसर नहीं हो सकता। फणीश्वरनाथ रेणु की यह अमूल्य कृति हमें अपनी ज़मीन, अपनी भाषा और अपनी पहचान से जुड़ने की प्रेरणा देती है कृ एक ऐसी प्रेरणा जो हर युग में सार्थक और आवश्यक है।

संदर्भ

1. रेणु, फणीश्वरनाथ. (1954). मैला आँचल. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
2. झा, रमेश, (2005). फणीश्वर नाथ रेणु जीवन और साहित्य दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
3. प्रसाद, विजय. (2001), हिंदी उपन्यासः परंपरा और प्रयोग, पटनाः बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
4. सिंह, नामवर. (2006). आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ, दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ।
5. त्रिपाठी, रमेशचंद्र, (2010). रेणु साहित्य में लोकसंस्कृति. पटनाः ग्रंथ निलय।
6. शुक्ल, रामचंद्र. (1935). हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसीः नागरी प्रचारिणी सभा।
7. राय, अमरनाथ. (2005). आंचलिक उपन्यासः रेणु की दृष्टि. कोलकाताः पुस्तक भंडार।
8. नारायण, रवींद्र. (2010). प्रेमचंद और रेणुः तुलनात्मक अध्ययन, दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशन।
9. सिंह, अरुण, (2009). आंचलिकताः साहित्यिक अवधारणा और प्रयोग, साहित्यिकी, 12(3)।
10. झा, मनोज. (2010). रेणु के उपन्यासों में सामाजिक संरचना, समकालीन साहित्य, 15(1)।
11. राय, अमरनाथ, (2009). फणीश्वर नाथ रेणुः विविध आयाम. दिल्लीः साहित्य अकादमी।

Cite this Article-

'डॉ0 सचेन्द्र कुमार', 'फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल' में लोक चेतना', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:06, June 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i60002

Published Date- 02 June 2025